भारत में मुगलों के शासन के प्रारंभ काल में छोटानागपुर में कई छोटे-मोटे हिन्दू और अर्द्ध-हिन्दू शासकों के राज्य थे। जैसे पलामू के खरवार, कोकरह के नागवंशी तथा सिंहभूम के सिंह-वंश प्रमुख थे। 1/2 एक अलग Page
इस काल एक महत्वपूर्ण परिवर्तन यह हुआ कि खरवारों को पराजित कर चेरों ने पलामू में एक नए राजवंश की स्थापना कर ली थी।

शेर खाँ को गद्दी पर बैठने से पूर्व ही चेरो रोहतास से चलकर पलामू में प्रवेश कर चुके थे। पलामू राज्य में अनेक प्रभावशाली चेरो राजाओं ने शासन किया जिनमें से प्रमुख निम्नलिखित है :

Page No.
Date

(1) महारत चेरो –

महारत चेरो शेर खाँ के समकालीन थे। महारत चेरो बिहार के क्षेत्रों में आतंक मचाया करते थे। उनके दमन के लिए जिससे यात्रियों को बंगाल आना जाना कठिन हो गया था। शेरखाँ के शिविर से वह प्रायः घोड़े, ऊँट, हाथी और बैल लूट लिया करता था। अतः उसका दमन आवश्यक समझा गया। अतः चौसा की लड़ाई 1539 ई० से ठीक पहले शेरखाँ ने अपने सेनापति खवास खाँ को महारत चेरो के विरुद्ध भेजा था। इसका उल्लेख मुगलकालीन सभी इतिहासकारों ने जैसे अहमद यादगार : तारीख-ए-शाही, अब्बास खाँ सरवानी ;

शेरवानी

के लोग

जंगलों और पहाड़ी इलाकों से एवं सड़क एवं पुलों एवं बंगाल के रास्ते को रोक देते थे

यानि 1538 ई० में

Teacher's Signature

तारीखे - ए - शेरशाही में किया है अहमद यादगार तथा अन्य लेखक के अनुसार इस आक्रमण का एक उद्देश्य यह भी था - श्याम सुंदर नामक एक सफेद हाथी को प्राप्त करना। हैबत खां और खवास खां की सम्मिलित सेना ने झारखंड के चेरो राजा को घेर लिया और उसे आत्म समर्पण करना पड़ा (1538 ई०)। लूट के अन्य सामान के साथ श्याम सुन्दर हाथी को भी शेर खां के समक्ष लाया गया।

रोहतासगढ़ से 4000 अश्वसेना के साथ पहाड़ों व नदियों को पार करके हुए आक्रमण किया था

खवास खां द्वारा 1538 ई० में महारथ चेरो को पराजित किये जाने के बाद भी सूर - चेरो संघर्ष का अंत नहीं हुआ।

इतिहासकारों का कहना है कि रक्सेल
ने मुगलों के विरुद्ध झारखंड को
आक्रामक स्थली का शरण स्थली तथा ... बढ़ाने के लिए नवीन मार्ग ... 2 सा (0) से।

(2) भागवत राय –

अकबर के समय पलामू का राजा भागवत राय था। पलामू पर अधिकार करने का दायित्व अकबर द्वारा मानसिंह को 1589ई को सौंपा गया। मानसिंह का प्रतिरोध चेरों ने किया लेकिन मुगलों के सामने उनकी स्थिति मजबूत नहीं रह सकी। अपनी स्थिति मजबूत कर मानसिंह पटना लौट गया। इस लड़ाई में रामगढ़ के राजा ने चेरों का साथ दिया था। मानसिंह लूट का अधिकांश भाग जिसमें 54 हाथी भी शामिल थे शाही दरबार में भेजा और अकबर के सामने 8 अप्रैल 1590ई को रखा गया लेकिन अकबर ने भागवत राय को ही पलामू का शासन सौंपा और

मुगल ने सैन्य troops को रखा

एक शाही सेना इसके खर्च पर रख दी। इस युद्ध से चेरों की शक्ति तो घट गई लेकिन पूर्ण रूप से समाप्त नहीं हुई। अकबर की मृत्यु (1605 ई.) के बाद करीब 15 वर्षों के दरम्यान चेरों ने मुगल सेना को हटा दिया और पलामू पर पुनः अधिकार कर लिया।

(ख) — जहांगीर के शासनकाल में मुगल-झारखंड संबंधों के इतिहास में एक सर्वथा नवीन युग का सूत्रपात हुआ। विशेषतः मुगल नागवंशी और मुगल-चेरो संबंधों के संदर्भ में। जहांगीर को कोकरह की नदियों विशेषकर शंख नदी से मिलने वाले हीरों की जानकारी मिल चुकी थी तथा

भागवत राय की मृत्यु

जहांगीर — जहांगीर के शासनकाल में पलामू में दो चेरो राजाओं

राजा विद्रोही अनन्तराय और सबल राय।

अनन्तराय — भागवत राय की मृत्यु के बाद उसका पुत्र अनन्त राय पलामू का शासक बना। वह (1630–61 ई०) तक लगातार 31 वर्षों तक शासन किया था। लेकिन इतिहासकार [illegible] के अनुसार जहाँगीर के शासनकाल के प्रारंभिक वर्षों में पलामू का वह राजा था। 1607 ई० में अबुल फजल के पुत्र अफजल खाँ को बिहार का सूबेदार (गवर्नर) नियुक्त किया गया। 6 सितंबर 1607 ई० को इरादत खाँ को बिहार का दीवान तथा बख्शी नियुक्त किया गया। जहाँगीर की आज्ञा से इन दोनों ने पलामू के अनन्तराय पर आक्रमण किया। लेकिन दो

चेरो परंपरा के अनुसार

ऐतिहासिक विवरणों ने इसका उल्लेख नहीं किया है

अनन्तराय

दो सप्ताह के भीतर अफजल खाँ की बीमारी से मृत्यु हो गई। अतः यह आक्रमण रोक दिया गया। मुगल मुस्लिम इतिहासकारों ने अनंतराय के विषय में कोई विशेष जानकारी नहीं दी। इसने 1630 से 1661 तक शासन किया।

(1612) सहबल राय — अनंतराय की मृत्यु के बाद सहबल राय पलामू का राजा बना। वह अत्यंत शक्तिशाली राजा सिद्ध हुआ। इसने सड़क-ए-आज़म पर चौपारण (आधुनिक जी.टी. रोड पर हजारीबाग जिला में) को अपना प्रमुख केंद्र बना लिया। वह मुगल काफिलों को लूट लेता था और बंगाल आने जाने के व्यावसायिक मार्ग को अवरुद्ध कर देता था। इससे जहांगीर क्रुद्ध हुआ और उसके अधिकारी सहबल को पराजित करने के बाद बंदी बनाकर दिल्ली ले गए। कहा जाता है कि सहबल ने अपनी

Page No.
Date

शरीर-सौष्ठव से नगरवासियों को प्रभावित किया और उसे बादशाह के मनोरंजनार्थ एक बाघ से निहत्था ही लड़ने को कहा गया। इस द्वन्द्व में वह मारा गया।

रुहेला की मृत्यु का समाचार मिलने पर चेरो ने सीमावर्ती मुगल प्रदेशों को लूटना शुरू किया शाही खजाना ले जाने वाली नाव को भी उन्होंने सोन नदी में लूट लिया। फलस्वरूप पुनः मुगल पलामू में प्रवेश कर गए।

✓

Teacher's Signature

शाहजहाँ —

(6)

प्रताप राय —

शाहजहाँ के काल के समय पलामू के इतिहास का क्रमबद्ध विवरण मिलता है। सहबल की मृत्यु के बाद प्रताप राय गद्दी पर बैठा था। उसने राज्य में सुख-शांति एवं समृद्धि लाया तथा पलामू के पुराने किले की भी मरम्मत करवाई। इस काल में राज्य की उत्तरी सीमा पटना से केवल 71 मील दूर थी। दक्षिण पश्चिम में यह राज्य कनहर नदी तक फैला था। दक्षिण में यह राज्य टोरी (आधुनिक चंदवा) तक था। कोठी, कुंडा और देवगन

सीमांतक ... इसे ... लों के ... र सका ... बक ... थी

जिस समय प्रताप राय शासक बना उस समय चेरो मुगल सम्बन्ध तनावपूर्ण थी। इस सम्बन्ध में राजा सिताबराय ने लिखा है कि "1632 ई० में बिहार के सूबेदार को पलामू की दौड़ जागीर की

Teacher's Signature

रूप में दिया गया और यहाँ का
(एक लाख छत्तीस हजार)
सलाना कर 1,36,000 रु० निर्धारित
की गई। प्राप्त राय से अधिक से
अधिक कर वसूला जाता था जिससे
उसे कष्ट हो रहा था। अतः उसने
बिहार के नए सूबेदार अब्दुल्ला खाँ
को सलाना कर देना बंद कर दिया।

बिहार के नए सूबेदार शाईस्ता
खाँ ने शाहजहाँ को सब वस्तु-स्थिति
की जानकारी दी तब बादशाह ने
उसे पलामू पर अधिकार करने और
प्रताप को आदेश दिया। पटना
को अपने बेटे मुहम्मद तालिब की
देख-रेख में छोड़कर शाईस्ता खाँ
18 अक्टूबर 1641 ई० को पलामू के लिए
चल पड़ा। उसके साथ 5000 घुड़सवार
और 15,000 पैदल सैनिक थे।
सेना का मुख्य भाग शाईस्ता खाँ के
नेतृत्व में, अग्रिम भाग जबरदस्त

सेना की देखरेख में, वाम भाग अग्रिम सेना, दक्षिणी और दायाँ भाग बरकतुआर सेना की देख रेख में आगे बढ़ रहा था। सेना का पिछला भाग सैयद मिर्जा के अधीन था। मुगल सेना गया की ओर से शत्रु-क्षेत्र में प्रवेश की। मुगल सेना जहाँ कहीं भी ठहरती पड़ाव के चारों ओर खाई खोदी जाती और मिट्टी के टीले बनाए जाते थे। जंगल काटकर सड़कें बनाई जाती थी तथा आसपास के गाँवों को लूट और जला दिए जाते थे उनका मुख्य उद्देश्य था चेरो प्रजा को आतंकित करना।

26 जनवरी 1642 ई० को मुगल सेना पलामू के आरु नामक गाँव पहुँची, वहाँ से पलामू का किला मात्र 4 मील की दूरी पर था। कवली चैरवान (जो आधुनिक कठौतिया गाँव है) नामा,

Teacher's Signature

Page No.
Date

स्थान पर पहुँचने के बाद मुगलों
का सामना चोरों से हुआ। दो
सड़कों के संगम (करसार - ए - दोराहा)
स्थान पर लड़ाई हुई जिसमें चोरों
जल्दी ही पराजित हो गए। लेकिन
चोरी हार मानने वाले नहीं थे
वे मुगलों की टुकड़ियों पर आक्रमण
करते रहे। अतः शाईस्ता खाँ और
जबरदस्त खाँ ने आगे बढ़कर
औरंगा नदी के किनारे पर किला
के पास ही बढ़ते है, मोर्चाबंदी
की दोनों पक्षों से गोलाबारी होती
रही। अनेक चोरी मारे गए अथवा
घायल हुए।
प्रतापराय ने अब समर्पण करने
का निश्चय किया और पेशकश
के रूप में अस्सी हजार रु देने
को तैयार हुआ यदि मुगल उसे
क्षमा कर देते। किलार के सूबेदार

Teacher's Signature

Page No.
Date

के प्रति वफादारी प्रकट करने के लिए वह पटना जाने को भी तैयार था। शाइस्ता खाँ ने प्रताप के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और पेशकश की रकम मिल जाने पर 12 फरवरी 1642 ई० को पटना लौट गया।
इसी बीच शाइस्ता खाँ को इलाहाबाद की सूबेदारी मिली और उसकी जगह इतिकाद खाँ को बिहार का सूबेदार बनाया गया। इसी बीच प्रताप राय ने मुगलों को सालाना कर देना बंद कर दिया था। इतिकाद खाँ उसे दंड देना चाहता था। प्रतापराय की प्रजा भी उससे परेशान थी। इसी समय प्रताप राय के परिवार में आंतरिक कलह के कारण हुए। इन परिस्थितियों से इतिकाद खाँ लाभ उठाना चाहा।

✓

Teacher's Signature

प्रतापराय के चाचा तेजराय और
उनका छोटा भाई दरिया राय इतिकाद
खाँ से पटना में मिला तथा प्रताप
राय को हटाने की माँग करने
लगे। उन्होंने यह भी वचन दिया कि
वे प्रताप राय को पकड़कर इतिकाद
खाँ को सौंप देंगे। ये दोनों पलामू
लौटे और अपने मित्रों की सहमति
से प्रताप को बंदी बना लिया। अब
तेज राय को पलामू का राजा बनाया
गया। किंतु, इतिकाद खाँ द्वारा आदेश
दिए जाने पर भी तेजराय ने प्रताप
राय को मुगलों के हवाले करने
से इंकार कर दिया।

प्रताप राय के कुछ दिन कैद रहने
के बाद दरिया राय तेजराय से
अप्रसन्न हो गया। उसने इतिकाद खाँ
से सलाह-मशविरा किया और
जबरदस्त खाँ 6 अक्टूबर, 1643 ई०

को देवगांव पहुंचा तो उसने देवगांव का किला मुगलों को सुपुर्द कर दिया। वह इतिकाद खाँ के पास पटना चला गया और जबरदस्त खाँ पलामू किला पर आक्रमण की तैयारी करने लगा। इसी बीच तेजराय ने मदन सिंह ठकुराई के नेतृत्व में एक सैनिक टुकड़ी जबरदस्त खाँ का सामना करने के लिए भेज दिया। ~~किंतु मदनसिंह ठकुराई पराजित हुआ।~~ अब बिहार के बख्शी अब्दुल्ला खाँ को जबरदस्त खाँ की सहायता करने भेजा गया। किंतु मदन सिंह ठकुराई पराजित हुआ।

इसी बीच 5 नवम्बर 1643 ई० को तेजराय पलामू किला से बाहर आखेट के निमित्त निकला। उसकी अनुपस्थिति में मदन सिंह ठकुराई के लड़कों, सूरत सिंह और

सबल सिंह ने प्रताप राय का समर्थन किया। उन्होंने प्रताप राय को मुक्त कर उसे पुनः पलामू की गद्दी पर बैठाया।

प्रताप राय ने अब मुगलों से युद्ध करना निरर्थक समझा। उसने जबरदस्त खाँ को पत्र लिखा कि वह मुगलों की अधीनता स्वीकार करने को तैयार है। जबरदस्त खाँ उसे अपने साथ पटना ले जाने को तैयार किया। प्रताप राय जबरदस्त से मुलाकात की और एक हाथी उपहार में दिया। उसे पटना जाने को तैयार देख जबरदस्त ने पलामू किला को और बहना बंद कर दिया।

16 नवम्बर, 1643 ई० को जबरदस्त खाँ प्रताप राय के साथ पटना रवाना हुआ। पटना में प्रताप ने इतिकाद खाँ को एक हाथी पेश किया और एक

Teacher's Signature

लाख रुपये की पेशकश के रूप देने को तैयार हुआ। इतिकाद खाँ की सिफारिश पर शाहजहाँ ने प्रताप राय को एक हजारी मनसबदार नियुक्त किया। पलामू उसी के अधिकार में रहने दिया गया और वहाँ का सलाना कर एक करोड़ दाम निर्धारित किया गया। (लाहौरी अब्दुल हमीद लाहौरी बादशाहनामा)

यह समझौता मार्च 1644 ई० में हुआ था। प्रताप 1647 ई० तक मुगलों का वफादार बना रहा। यद्यपि प्रताप राय के बाद भूपाल राय शासक बना लेकिन वह कुछ मास तक ही शासन कर पाया। इसके बाद गद्दी मेदिनी राय को मिली।

औरंगजेब और पलामू के चेरो

औरंगजेब के शासन काल के प्रारंभिक वर्षों में पलामू का चेरो राजा मेदिनी राय था। उसने 1658 - 1674 ई० तक पलामू में राज किया। कहा जाता है कि गद्दी पर बैठते ही उसने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली। लेकिन वह मुगलों को कर देना बंद कर दिया तथा शाहजहाँ के पुत्रों में उत्तराधिकार के युद्ध का पूरा-पूरा फायदा उठाना शुरू किया। उसने सीमावर्ती मुगल प्रदेशों को में लूट-पाट मचाना आरंभ कर दिया, तथा पड़ोसी राजाओं पर भी आक्रमण करता रहता था। उसने कोकरह के नागवंशी राजा की राजधानी दोइसा नगर पर आक्रमण किया। लूट की

Page No.
Date

सामान में वह प्रसिद्ध पत्थर का फाटक भी था जो अब नागपुर द्वार के नाम से पलामू के नया किला की शोभा बढ़ा रहा है। अपने पलामू के नए किले का निर्माण पुराने किले के निकट ही एक पहाड़ी पर कराया था और इसी में नागपुर-फाटक को लगाया गया। इन दोनों किले के ~~निकट~~ बीच ~~ही~~ से औरंगा नदी बहती थी और सम्पूर्ण इलाका ऊँचे पहाड़ों और घने जंगलों से घिरा था जो अभेद्य जान पड़ता था। यह स्थिति औरंगजेब जैसे साम्राज्यवादी शासक के लिए ~~अ~~ ~~था~~ असह्य थी।

~~यह स्थिति औरंगजेब के लिए असह्य था।~~ उसने बिहार के सूबेदार दाउद खाँ को पलामू पर आक्रमण करने और घेरे

Teacher's Signature

राजा ने सलाना कर वसूलने
का आदेश दिया। इसने बिहार
के कई जागीरदारों और फौज-
दारों को भी आदेश दिया कि वे
दाऊद को इस अभियान में सहायता
दे।

दाऊद खाँ 23 अप्रैल, 1660 ई० को
पटना से पलामू के लिए रवाना
हुआ उसके साथ थे दरभंगा का
फौजदार मिर्जा खाँ, ~~[illegible]~~ में
चैनपुर का जागीरदार तहव्वुर खाँ,
मुंगेर का जमींदार राजा बहरोज तथा
अन्य कुछ पदाधिकारी थे इन पदाधिका-
रियों में प्रमुख थे — शेख नाहर,
शेख अहमद, मुहम्मद-शाहिद और
शेख शफी। ~~कोकरा~~ चौखरे का
नागवंशी राजा रघुनाथ शाह भी इस अभियान
में मुगलों की ओर से शामिल
हुआ क्योंकि वह मेदिनी राय द्वारा

अत्यंत सावधानी से साथ दाउद खाँ आगे बढ़ रहा था। 3 नवम्बर 1660 ई. को वह तरहसी पहुँचा। यहाँ पलामू राजा के मंत्री सूरत सिंह ने दाउद से मुलाकात की। उसने राजा द्वारा बिना किसी शर्त के आत्मसमर्पण का आश्वासन दिया। उसने पलामू राजा की ओर से राजा बहराम को मध्यस्थता करने का आग्रह किया। उसने पेशकश के रूप में एक लाख रु० और दाउद खाँ को पचास हजार रु० देने का भी वादा किया।

दाउद खाँ ने इसकी सूचना औरंगजेब को भेजी और शाही उत्तर आने तक अभियान स्थगित रखा। लेकिन इसी अवधि में एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटी। पलामू राजा के कुछ लोगों ने एक शाही कापिले

को दाउद खाँ के शिविर से
18 किलोमीटर की दूरी पर ही लूट
लिया। इससे स्पष्ट हो गया कि
राजा के अनुयायी कुगालों के से
सेवक कर्नाटक नहीं के पक्ष मे नहीं
थे। यद्यपि राजा ने इसके लिए
खेद प्रगट किया लेकिन दाउद खाँ
पलामू की राजधानी की ओर बढ़ना
ही उचित समझा।
बाध्य होकर चेरो राजा को भी
युद्ध की तैयारी करनी पड़ी। दोनों
पक्षों शाही आदेश की प्रतिक्षा में
थे कुछ दिनों बाद औरंगजेब का
आदेश आया कि पलामू के राजा
को इस्लाम धर्म स्वीकार करना
होगा और पेशकश की रकम
देनी होगी। तभी उसे राजा पद
पर बना रहने दिया जाएगा।
आसपास दाउद खाँ को छूट थी कि

Teacher's Signature

वह पलामू किला को खाली कर चेरो राज्य पर कब्जा कर ले। यह इस आदेश को राजा के पास पहुँचाने के पहले ही 17 दिसम्बर को अत्यधिक उतावले तहव्वुर खाँ दाउद खाँ के आदेश के बिना ही चेरो पर आक्रमण कर दिया।

पलामू के राजा मेदिनी राय भी औरंगजेब की शर्तो को अस्वीकार कर अंतिम क्षण तक युद्ध के लिए तैयार हो गया। दोनों पक्षों के बीच युद्ध और गोलाबारी होते रहे। 20 दिसम्बर तक चेरो अपनी जगह को रखने की स्थिति में नहीं रह गए और वे औरंगा नदी के ओर निकट तक पीछे हट गए।

पुनः चेरो पर तीन ओर से हमला हुआ और युद्ध दो पहर तक चलता रहा। दाउद की सेना ने बहुत

बहादुरी दिखाई और अंततः ~~को पीछे हटना पड़ा अंग्रेजों से~~
अनेक चेरो मारे गए या घायल हुए।
चेरो में भगदड़ फैल गई, वे बुरी
तरह पराजित हुए और मुश्किल
से नए किले में पहुंचकर आश्रय
ले सके। लेकिन आक्रमणकारी यहां
तक पहुंचकर नए किले के मुख्य
द्वार पर हमला किया। चेरो का
प्रतिरोध क्षीण पड़ने लगा। चेरो
राजा उस द्वार से भाग निकला
जो जंगल की ओर खुलता था।
इस तरह दोनों किलों पर मुगलों का
कब्जा हो गया और सम्पूर्ण राजधानी
उनके ~~कब्जे~~ नियंत्रण में आ गई।
इस अंतिम लड़ाई में 61 आक्रमण-
कारी मारे गए और 177 घायल
हो गए। चेरो बड़ी संख्या में
हताहत हुए। चेरो राजधानी से

प्रायः सभी निवासियों की हत्या कर दी गई। मंदिरों को प्रतिमाओं सहित ध्वस्त कर दिया गया और सर्वत्र अज़ान सुनाई देने लगी।

पलामू-विजय दाऊद के सैनिक-जीवन की महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। इसी अभियान में उसने उस सामरिकता, कुशलता, तत्काल निर्णय-शक्ति और नेतृत्व का परिचय दिया जो उसने भविष्य में अनेक अवसरों पर प्रदर्शित किया। (आलमगीरनामा, पृ० 657-59)।

पलामू के किलों के पतन के बाद लड़ाई प्रायः समाप्त हो गई। बहादुर चेरो ने देवान किला के पास एक बार पुनः मुगलों का सामना किया, किन्तु उस किले पर भी

दाउद खाँ के एक सैन्य अधिकारी शेख शफी ने कब्जा कर लिया। दाउद ने कोठी के किले में भी फौज रख दी। कोठी शीघ्र ही मुस्लिम आबादी वाला एक बड़ा कस्बा बन गया। पलामू के राजा मेदिनी राय को अंततः सुरगुजा में शरण लेनी पड़ी।

पलामू विजय के बाद दाउद खाँ वहाँ के प्रशासन की व्यवस्था के लिए पलामू में कुछ दिनों तक रुका रहा। वित्तीय मामलों को सुलझाने के अतिरिक्त उसने कई स्थानों की किलेबंदी की। 1662 ई० में पुराना किला में पलामू-विजय की स्मृति में एक मस्जिद का निर्माण कराया गया। विजित प्रदेशों की समुचित प्रशासकीय व्यवस्था

करने के बाद दाउद खाँ पटना लौट गया।
औरंगजेब ने मनकली खाँ को पलामू का फौजदार नियुक्त किया। लौटते समय दाउद पलामू-किला का सिंह-दरवाजा अपने साथ लेता गया। उसने उसे दाउदनगर (वर्तमान औरंगाबाद जिला में) की अपनी गढ़ी में लगवाया। दरबार से दाउद के लिए सम्मान पत्र भेजे गए। इनाम के रूप में औरंगाबाद जिला स्थित अमझर, मनौरा तथा गोह नामक स्थान दिए गए। उसे पचास हजार रु. मूल्य के मोतियों की एक माला भी दी गई। पलामू अभियान में भाग लेने वाले अन्य प्रमुख लोगों को भी पुरस्कृत किया गया। वर्तमान दरभंगा राज परिवार के

Teacher's Signature

मुगल सूबेदार ठाकुर के पुत्र
महीनाथ ठाकुर (1667-87 ई०) को
तिरहुत, मुंगेर, पूर्णियाँ और तालपुर
सरकार के कई परगने दिए गए।
फौजदार मनकली खाँ
पलामू में 1666 ई० तक रहा। 22
अगस्त 1666 ई० को उसका पलामू
से तबादला हो गया और पलामू
को सीधा बिहार के सूबेदार
की देखरेख में रख दिया गया।
यद्यपि दाऊद द्वारा पराजित होने
पर चेरो राजा मेदिनी राय सरगुजा
भाग गया था लेकिन मनकली
खाँ के हटते ही वह पुन: पलामू
लौट आया और अपने खोए हुए
राज्य पर अधिकार कर लिया।
उसने शीघ्र ही पलामू को
विपन्नावस्था से उबार कर समृद्धि
... | काल

ने फिर हस्तक्षेप नहीं किया।

मेदिनीराय के शासनकाल को चेरो शासन के स्वर्ण युग के रूप में स्मरण किया जाता है। इसने कृषि को प्रोत्साहित किया तथा ध्वस्त हुए पलामू की दशा को सुधारने का प्रयास किया। पलामू अत्यंत समृद्धि सम्पन्न हो गया और प्रजा को सुख-सुविधा की कोई कमी नहीं थी।

मेदिनी राय के पलामू की गद्दी पर पुनर्स्थापित हो जाने पर भी औरंगजेब ने इस क्षेत्र में रुचि लेना बंद नहीं किया। पलामू पर मुगलों की नाममात्र की ही सही सम्प्रभुता बनी रही।

मेदिनी राय की 1674 ई० में मृत्यु हो गई। अगला उत्तराधिकारी रुद्रराय था जिसने 1674 से 1680

विक्रमपाल राय के बाद साहेब राय राजा बना। और 1716 ई० तक गद्दी पर कायम रहा।

ई० तक शासन किया। रूद्रराय के उत्तराधिकारी विक्रपाल राय ने 1697 ई० तक राज्य किया। और 1695 ई० में फिदाई खाँ को बिहार का सूबेदार नियुक्त किया गया था। विक्रपाल राय के बाद साहेब राय राजा बना। इसका शासनकाल 1716 ई० में समाप्त हुआ। और 1703 ई० में अलीकुरसान को बंगाल के साथ-साथ बिहार का भी सूबेदार बनाया गया। इस अवसर पर उसकी जागीर में एक करोड़ चालीस लाख दाम की वृद्धि की गई। इस राशि में अस्सी लाख दाम उसे शाहाबाद और चालीस लाख दाम पलामू से मिलने को था। औरंगजेब की मृत्यु के समय पलामू की यही वस्तु-स्थिति थी

इतिहासकार सिताबराय के अनुसार औरंगजेब की मृत्यु के बाद पलार के राजा साहब राय ने अजीमाबाद (पटना) के मुस्लिम अधिकारियों की अवज्ञा की और सूबेदार इब्राहिम खाँ के समय में निर्धारित सलामी कर देना बंद कर दिया। राय साहब की 1716 ई० में मृत्यु हो गई।